P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-4* December- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जैन आगम साहित्य में पर्यावरण चेतना एंव संरक्षण
Environmental Awareness and Conservation in Jain Agam Literature

नीतू कुमारी
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश (Abstract)

जैन आगम ग्रंथो में परि का अर्थ "पाइस सद महष्णवों" से है, जिसका अर्थ सर्वतोभाव, संमतात, सामीप्य व समीपता आदि से है। इस तरह पर्यावरण को सूक्ष्मता से देखने पर यह भाव उत्पन्न होता है कि जो समान्तात आवरण है वह पारस्परिक संबंध सूचक है, न कि सर्वत्र सर्वतोभाव की समाप्ति करने वाला। जहॉ समभाव व समीपता होते है वहॉ प्रकृति पूर्णरूपेण सुरक्षित होती है। पर्यावरण के अर्थ को आधुनिक वैज्ञानिक जगत व जैनागमों में विद्यमान अर्थ में विरोध नही है बल्कि जैन ग्रंथों में तो सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि के स्वभाविक संरक्षण पर अनादिकाल से बल दिया गया है। यहॉ तक कि जीवों के स्थान, स्थिति, हलन–चलन, श्वासोच्छवास, शारीरिक गठन, संवेदनशीलता, स्पंदन, आहार, प्रजनन, विसर्जन, अनुकूल, जीवन–मृत्यु का भी सूक्ष्म विवेचन जैन शास्त्रों में उपलब्ध है।

In the Jain Agam Grantho, pari means "two hundred of the Mahasnavas", which means omnipresence, affection, proximity and proximity. In this way, a subtle view of the environment produces the feeling that the parallel covering is an indicator of reciprocal relationship, not a culmination of omnipresence everywhere. Where there is equality and proximity, nature is completely safe. The meaning of environment is not opposed to the meaning existing in modern scientific world and Jainagams, but in Jain texts, the natural protection of micro-organisms, earth, water, air, fire, has been emphasized since time immemorial. Even the subtle discussion of the place, position, movement, breathing, physical formation, sensitivity, quivering, diet, reproduction, excretion, favorable, life-death are also available in Jain scriptures.

मुख्य शब्द : पुदगल, अहिंसा, तृष्णा, परिग्रह, चेतना, परस्परोग्रहो, जीवानाम, महाव्रत, अपरिग्रह, अस्तेय।

Abstract: Pudgal, Ahimsa, Trishna, Parigraha, Chetana, Interconnection, Jivanam, Mahavrata, Aparigraha, Astey.

प्रस्तावना

जैन ग्रंथों मे आवरण शब्द का प्रयोग 'ज्ञान' के साथ करने पर ज्ञानावरण व 'दर्शन' के दर्शनावरण और 'कर्म' के साथ कर्मावरण के रूप में अनेकों स्थानों पर प्रयोग किया गया है। जहॉं उसका तात्पर्य आच्छादित करने से, ठकने से व तिरोहित करने वाले आदि अर्थ से किया गया है। जो आवृत करने वाला है या जिसके द्वारा आवृत किया जाता है उसे आवरण कहते है।
"आवृतोत्सयावियतेडनेनेति वा आवरणम"

जिसके द्वारा आवृत किया जाता है। इस प्रकार जो सभी ओर से सर्वतोभाव रूप में प्रकृति के वातावरण को स्थायित्व प्रदान करता है, पर्यावरण है तथा प्रतिकूल परिस्थितियाँ प्रदूषण है।

वैसे जैन धर्म ग्रंथों में 'लोक' शब्द के अंतर्गत जिन 6 द्रव्यों की बात की गयी है वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वह पर्यावरण के समकक्ष कहे जा सकते है हालांकि उसका विस्तार वर्तमान संदर्भो में कई गुना बंड़ा है। लोक के आकार – विस्तार आदि का अत्यधिक विस्तृत विवरण जैन ग्रंथों में उपलब्ध है। अन्य धर्मो की मान्याताओं से जैन धर्म के लोक–विषयक चिंतन में मौलिक अंतर है। जैनागमों के अनुसार, 'लोक' अनादि निधन औश्र स्वंय नियंता है। जैनागम 'ईश्वर' को सृष्टि का कर्ता और जगत व्यवहार का नियता नहीं मानते।

जैन दृष्टि में अनन्त आकाश के जितने भाग में जीव–पुदगल आदि षड द्रव्य पाये जाते है वह लोक है। यहॉ पुदगल से तात्पर्य पदार्थ से है। इस तरह

आकाश मे जहॉ तक जीव है अजीव है। 'लोक' है जिसका आधुनिक नामकरण पर्यावरण है।

पर्यावरण जैन दृष्टि में

पर्यावरण संबंधी अधिकतम समस्याओं के समाधान जैन सिद्धांतों में समाहित है। कल्पवृक्ष को समाप्ति के बाद आदिपुरूष ऋषभदेव ने सबके कल्याण के लिए पर्यावरण संरक्षण और अहिंसा की नींव पर आधारित नूतन समाज की व्यवस्था बनाई।

पर्यावरण प्रदूषण करने मे दो मुख्य कारण है – तृष्णा और हिंसा। तृष्णा और हिंसा का ही विकसित रूप है। परिग्रह और क्रूरता। जैन धर्म प्रारंभ से ही तृष्णा और हिंसा पर संयम करने की बात कहता रहा है। हिंसा का जीवन में विस्तार न हो, इसके लिए महावीर द्वारा वृक्ष, वनस्पति, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि आदि सभी की चेतना पहचानकर उनके साथ मनुष्य की समानता की बात की गई है। हिंसा को तिरोहित करने के लिए ही अहिंसा एंव शुद्ध आहार पर जैन धर्म ने विशेष जोर दिया है। बहुत से धानय, बीजों, फलों एंव साग पर भी प्रतिबंध लगाये गये हैं जिनसे पर्यावरण संतुलन को खतरा होने की आशंका थी।

पर्यावरण चेतना एंव संरक्षण

जैन दर्शन के अनुसार पर्यावरण सोच एंव पर्यावरण चेतना को कोई नयी उदभावनाएँ नहीं कहा जा सकता। जब कभी भी मानव मात्र की प्रकृति, सौन्दर्य बोध और इनके प्रति संवेदना जागी होगी। तब यह दृष्टि बोध पर्यावरण – चेतना का सहज विस्तार तथा सामाजिक प्रतिमान बन गया होगा। वस्तुतता जैन धर्म एंव दर्शन पर्यावरण चेतना व पर्यावरण संरक्षण के चिंतन को संपूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इसलिए यह जीवन और जगत की कुछ समस्याओं से संबधित है। जैन दार्शनिकों, मनीषियों आचार्यो द्वारा पर्यावरण चेतना एंव संरक्षण की स्वीकृति एंव प्रोत्साहन प्रदान किया गया है।

जैन धर्म के मूल मंत्र "परस्परोग्रहों जीवानाम" के अनुसरण से व्यापक शांति व्याप्त हो सकती है। प्रकृति का आधार है – साहचर्य, सहकार सहयोग। यह बहुरूपता में विश्वास करती है। एकरूपता मे नहीं। यद्यपि "जीवों जीवस्य जीवनम" को प्रकृति प्रतिपादित करती है तथापि यह पारस्परिक संतुलन को प्रोत्साहित करती है– न तो किसी एक प्रजाति का आधिक्य अथवा अभाव रहने देती है और इसी प्रकार सृजन की सरगम को अनवरतता प्रदान करती है।

जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांत "अहिंसा–परमों धर्मः" में तो हत्य हिंसा के साथ–साथ भाव हिंसा का भी निवेध किया गया है। अहिंसा ही पर्यावरण का मूल आधार है।

जैन धर्म में पंच महाव्रत अहिंसा, सत्य, ब्रहाचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय है। जिनमें अहिंसा को पर्यावरण संरक्षण में सर्वाधिक महत्व दिया गया है। जीवन से वैरभाव का त्याग औश्र समता भाव का विकास ही सुरक्षा एंव संरक्षण का मुख्य आधार है और यह पंच महाव्रतों द्वारा व्यावहारिक स्तर पर संभव है।

अध्ययन का उदेश्य

पर्यावरण जागरूकता के लिए साहित्य में पर्यावरण के लिए संजीदगी के साथ इसके महत्व को सर्वोपरि रखा गया है।

निष्कर्ष

जैन धर्म एंव दर्शन पर्यावरण चेतना व पर्यावरण संरक्षण के चिंतन को संपूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान करता है, इसलिए यह जीवन और जगत की विशेष समस्याओं से संबधित है। जैन दार्शनिकों, मनीषियों आचार्यो द्वारा पर्यावरण चेतना एंव संरक्षण की स्वीकृति एंव प्रोत्साहन प्रदान किया गया है। इतना ही नही अनेकानेक ग्रंथों, सूक्तों द्वारा इसे प्रतिष्ठित कर मानव जीवन का अभिन्न अंग बनाया गया है। इस प्रकार जैन धर्म प्रकृति की रक्षा का धर्म है जिसे एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पाइअ – सद्ध महण्णवो पृ. 550
वृहदद्रव्यसंग्रह –11–12, 15–16
स्थानांग 2/1/57
तत्वार्थसूत्र 5/21
पंचस्तिकाय, श्लोक, 211
हरिवंश पुराण सर्ग 18/55